हज्जामों की ट्रेड यूनियन

मुल्क राज आनंद

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

आधुनिक भारत के निर्माताओं में, हमारे गाँव के नाई लड़के चंदू का भी बड़ा योगदान है. पर उसे लोग तब तक अस्वीकार नहीं करेंगे, जब तक कि मैं इतिहास में चंदू के योगदान पर प्रकाश न डालूँ. सच तो यह है चंदू का यह दावा एक ऐसे कारनामे पर आधारित था जिसका पूरा महत्व उसे तक नहीं पता था. लेकिन, भारत के अधिकांश महापुरुषों के विपरीत, चंदू को अपने स्वयं के महत्व की अतिशयोक्तिपूर्ण धारणा थी. हालांकि महापुरुषों जैसे चंदू में भी एक देशी अहंकार था जो कभी-कभी निराश करने वाला और कभी-कभी आकर्षक भी था.

चंदू को मैं उन दिनों से जानता था जब वो अपने नंगे शरीर के बीच सिर्फ चीर का एक टुकड़ा पहनता था. तब हम गाँव की गलियों में एक साथ दीवारों पर चढ़ते थे, सिपाही, दुकान-दुकान, या ताली बजाने वाले और अन्य छोटे-छोटे खेल खेलते थे. हम वो खेल खेलते थे जिन्हें हमने अपनी ख़ुशी और अपनी माताओं के दिखाने के लिए आविष्कार किए थे. क्योंकि बाकी बड़े लोग हम पर कोई ध्यान ही नहीं देते थे.

चंदू मुझ से लगभग छह महीने बड़ा था, और वो हमेशा सभी मामलों में नेतृत्व करता था. मैं स्वेच्छा से उसकी बात मानता था क्योंकि वो सही मायने में ततैया पकड़ने में एक जीनियस था. वो उनकी पूंछ दबाकर जहर बाहर निकालता था. फिर उनके छोटे पैरों को

सूती धागे से बांधकर उन्हें उड़ाने में वो माहिर था. अगर मैं ततैयों के पास जाने की भी कोशिश करता तो वे हमेशा मेरे गाल पर डंक मार देती थीं. ततैया, पानी पीने के लिए पोखर पर आकर बैठती थीं.

जब हम बड़े हुए तब भी वो मुझे आदर्श और समपूर्णता का अवतार लगता था, क्योंकि वो नाजुक डिजाइन की कागज पतंग बनाकर उन्हें उड़ा सकता था, जो मेरे बस की बात नहीं थी.

स्कूल में वो बहुत अच्छा नहीं था, शायद इसलिए उसके पिता ने उसे नाई जाति वंश की ट्रेनिंग जल्दी ही दी और उसे गाँव में बाल काटने के लिए भेज दिया. चंदू के पास घर में स्कूल का होमवर्क करने का समय नहीं था. लेकिन वह हर हालत में कविता पाठ करने में मुझसे बेहतर था, न केवल वो पाठ-पुस्तक में छंदों को रट कर याद करता था, बल्कि वह किताब में गद्य पृष्ठों को भी इस प्रकार दोहराता था ताकि वे कविता की तरह लगें.

मेरी माँ ने इस तथ्य पर नाराजगी जताई कि चंदू ने स्कूल में छात्रवृत्ति जीती थी जबकि मुझे पढ़ाने के लिए शुल्क देना पड़ता था. माँ ने मुझे चंदू के साथ खेलने से लगातार मना किया. उन्होंने कहा कि चंदू एक नीच जाति के नाई का बेटा था और मुझे अपनी जाति और वर्ग की स्थिति को बनाए रखने के लिए उसके साथ नहीं खेलना चाहिए था. लेकिन जो भी जन्मजात विचार मुझे अपने पूर्वजों से विरासत में मिले थे, उसमें निश्चित रूप से मुझे श्रेष्ठता की कोई भी विरासत नहीं मिली थी. असल में, माँ जब हर सुबह मेरे माथे पर जाति का लाल टीका लगाती थीं तो उस निशान से मुझे शर्म आती थी. मुझे औपचारिक अचकन,

तंग सूती पतलून, सोने के काम वाले जूते और रेशम की पगड़ी जैसे कपड़ो से भी घुटन होती थी. मेरी उन्हीं शानदार कपड़ों को पहनने की ललक होती थी जो चंदू पहनता था - एक जोड़ी खाकी शॉर्ट्स, जो रिटायर्ड सूबेदार ने उसे दिए थे, एक भड़कीला काले रंग का मखमली कमरकोट, जिसे सीपियों के बटनों से सजाया गया था, और एक गोल टोपी जो कभी हमारे गाँव के वकील लाला हुकम चंद की थी.

मुझे चंदू के मुक्त होकर इधर-उधर जाने की आज़ादी से भी चिढ़ थी जो उसे अपने पिता के प्लेग में मरने के बाद मिली. तब वो सुबह के समय उच्च जाति के घरों में दाढ़ी बनाने और बाल काटने के लिए जाता था. वो नहा-धोकर साफ़ कपड़े पहनता था, और फिर वो शहर से छह मील दूर, लाला हुकम चंद की घोड़ागाड़ी के पायदान पर बैठकर आराम से शहर तक की सवारी करता था.

लेकिन चंदू मुझ पर मेहरबान था. उसे पता था कि मैं शायद ही कभी शहर गया होऊंगा. मुझे अपने दिल में ईश्वर के भय संजोए रोजाना बड़े गाँव जोआदियाला के माध्यमिक स्कूल में तीन मील, लेफ्ट-राइट करते हुए जाना पड़ता था, जबकि अपने पिता की मृत्यु और स्कूल छोड़ने के बाद अब चंदू को टीचर की पिटाई का कोई डर नहीं था. इसलिए चंदू शहर से हमेशा मेरे लिए कोई उपहार लाता था - कभी पेंट ब्रश, या सोने के रंग की स्याही, सफेद चाक, या पेंसिल को तेज करने वाला चाक़ू. और वो सभ्यता के बाज़ारों में बिकने वाली विभिन्न चीजों के लंबे वर्णन से मेरा मनोरंजन करता था. वो विशेष रूप से उन अंग्रेजी शैली के कपड़ों का वर्णन करता था जिन्हें वो कोर्ट-कचहरी में साहिबों और वकीलों,

पुलिसकर्मियों और चपरासियों को पहने हुए देखता था. शाम को वो लाला हुकम चंद की घोड़ागाड़ी के पायदान पर बैठकर घर वापिस आता था. और, एक या दो बार, उसने मुझ से अपनी एक गुप्त इच्छा व्यक्त की. चंदू की पेशेवर कमाई को माँ एक मटके में छिपा पर रखती थीं. चंदू उन पैसों को चुराकर खुद के लिए कलन खान जैसे औज़ार खरीदना चाहता था. कलन खान एक दंत चिकित्सक था जिसने अपने चमत्कारों से शहर में लोगों के नए दांत और जबड़े फिट किए थे. उसने मुझे कलन खान का विस्तृत वर्णन सुनाया - उसके बालों की मांग एक तरफ थी, और वो एक हाथीदांत का कॉलर, टाई, काला कोट और धारीदार पतलून, और रबर का ओवरकोट पहनता था. चंदू ने मुझे उसके कौशल के बारे में बताया, जिसमें वो जादूगर एक अंग्रेजी चमड़े का हैंड-बैग खोलकर उसमें से अपने चमचमाते स्टील के औज़ारों को निकालता था.

फिर उसने इस सवाल पर मेरी सलाह मांगी. क्या पाँचवीं कक्षा तक शिक्षित नाई अगर डॉ. कलन खान जैसी पोशाक पहने तो वो क्या ज्यादा गरिमापूर्ण नहीं दिखेगा? "हालांकि मैं एक उच्च शिक्षित डॉक्टर नहीं हूँ," उसने कहा, "पर मैंने अपने पिता से लोगों के शरीर पर फुंसी, फोड़े, नासूर आदि का इलाज करना और चीरा लगाना सीखा है. मेरे पिता ने वो काम अपने पिता से सीखा था."

मैं उसके प्रोजेक्ट से सहमत था और मैंने उसे पूरे उत्साह के साथ प्रोत्साहित किया क्योंकि वो मेरा हीरो था. एक दिन मैं सुबह अपने घर के दरवाजे पर चंदू को पाकर रोमांचित हो गया. वो एक सफेद पगड़ी, एक सफेद रबर का कोट (जो उसके लिए बहुत बड़ा, लेकिन

फिर भी शानदार था), एक जोड़ी चमकीले जूते पहने था जिनमें मैं अपना चेहरा साफ देख सकता था. उसके हाथ में एक चमड़े का बैग था. वो अपने राउंड पर जा रहा था. वो मुझे सिर्फ यह दिखाने आया था कि वो उस पोशाक में वो कितना भव्य दिख रहा था.

"अद्भुत!" मैंने कहा, "अद्भुत!"

और फिर वो अपने मकान मालिक के घर की ओर रवाना हुआ, जिनका वो हर रोज सुबह मुंडन करता था. मैं भी उसके पीछे-पीछे हो लिया.

उस समय गली में बहुत भीड़ नहीं थी, इसलिए मैंने अकेले ही चंदू की महिमा देखी. वो एक डॉक्टर के कपड़े पहने था पर वो खुद इस बात से आत्म-सचेत था. वो सड़क पर बहुत संभल कर चल रहा था - औरतों द्वारा दीवारों पर गोबर के उपलों से बचते हुए और नालियों के बहते गंदे पानी से बचते हुए. लेकिन जैसे ही हम जमींदार के घर में दाखिल हुए, हम जमींदार के छोटे बेटे देवी से मिले, जिसने चंदू की खूबसूरत वीर पोशाक को देखकर खुशी से अपने हाथों से ताली बजाई जैसा वो मिशन के पादरी साहिब के आने की घोषणा देने के लिए करता था.

"राम! राम! राम!" जमींदार बिजय चंद ने अपने अपने कान पर लटके जनेऊ के पवित्र धागे को छूते हुए कहा, क्योंकि वो उसी समय शौचालय गए थे. "सुअर का बच्चा! वो हमारे घर में गाय के चमड़े का बैग, कोट और न जाने किस जानवर की खाल के बने काले अंग्रेजी जूते लाया है. बाहर चल! बाहर निकल! शैतान के बेटे! तूने मेरे धर्म को अपवित्र किया है. मुझे लगता है कि बाप के मरने के बाद अब तुझे किसी का डर नहीं बचा है."

"लेकिन जागीरदार साहब मैंने एक डॉक्टर के कपड़े पहने हैं."

"दूर चला जा सूअर, चल जा और अपनी औकात यानी नाई वाले कपड़े पहन. अगर तूने कोई भी नई चाल चली तो मैं तेरी धुनाई करूंगा."

"लेकिन राज बिजय चंद साहब!" चंदू ने अपील की.

"दूर हो जा! आँखों से दफा हो जा! तू बेकार है!" जमींदार चिल्लाया.

"तू बिल्कुल भी पास नहीं आ नहीं तो शुद्ध करने के लिए हमें पूरे घर को पवित्र गाय के गोबर से लीपना पड़ेगा."

चंदू लौट आया. उसका चेहरा तमतमा रहा था. गली के कोने पर किराने का सामान रखने वाले थानू राम के के सामने साहूकार ने उसकी बेइज़्ज़ती की थी. चंदू बहुत अपमानित महसूस कर रहा था इसलिए शर्म की वजह से उसने मेरी तरफ देखा तक नहीं.

जमींदार का बेटे देवी अपने पिता के इन शब्दों को सुनकर रोने लगा, और फिर मैं उससे सवाल करने के लिए रुका. जब मैं गली के अंत में पहुँचा तो मैंने साहूकार को तराज़ू की एक डंडी के साथ देखा, जो उसने हाथ में उठाई थी और वो चंदू को बुरी-बुरी गाली दे रहा था.

"सूअर के बच्चे तुझे अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए और अपनी बूढ़ी माँ की देखभाल करना चाहिए. उसकी बजाए तू अस्पताल के गंदे कपड़े पहनकर लाटसाहब जैसे घूमता है! जा और अपने अपने असली कपड़े पहन कर वापस आ! फिर मैं तुझे अपने बाल काटने दूंगा!" और यह कहकर उसने अपने सिर के ऊपर चोटी की गाँठ को सहलाया.

चंदू बहुत दुखी लग रहा था, और वो मेरे सामने से गुस्से में ऐसे भागा जैसे मैं ही इन हादसों के लिए जिम्मेदार था. और फिर मैं यह सोचकर रोया कि अब शायद वो मुझसे सिर्फ इसलिए नफरत करता है क्योंकि मैं उससे श्रेष्ठ जाति का था.

"पंडित परमानंद के पास जाओ!" मैं उसके ऊपर चिल्लाया, "और उनसे कहो कि यह कपड़े अशुद्ध नहीं हैं."

"अच्छा तो तुम भी उसके ही साथ हो," पंडित परमानंद ने जमींदार के घर से निकलते हुए कहा. पंडितजी को इस अपवित्र आपातकालीन स्थिति के बारे में चर्चा करने के लिए बुलाया गया था. "तुम लड़कों को जो स्कूली शिक्षा मिली है उसने तुम्हें बरबाद कर दिया है. तुम्हारे लिए उन चीजों को पहनना ठीक हो सकता है क्योंकि तुम ऊंची जाति के हो और एक विद्वान बनोगे, लेकिन उस नीच जाति के लड़के को इस तरह के परिधान पहनने का क्या अधिकार है? वो हमारी दाढ़ी, हमारे सिर और हाथों को छूने के लिए बना है. भगवान ने उसे पर्याप्त रूप से अपवित्र बनाया है. अब वो और अधिक अपवित्र क्यों बनना चाहता है? तुम एक उच्च जाति के लड़के हो. वो एक निम्न जाति का शैतान है! वो एक दुष्ट है!"

चंदू ने यह सब सुना. उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा और हड़बड़ाहट में वहां से भाग गया, उस दुर्व्यवहार को उसने जैसे-तैसे झेला.

मेरी माँ ने मुझे तुरंत बुलाया और कहा कि मेरे खाने और स्कूल जाने का समय हो गया था, नहीं तो मुझे देर हो जाएगी. माँ, नाई के लड़के के साथ मेरे संबंध के बारे में मुझे फिर से व्याख्यान देने से नहीं चूकी.

लेकिन मैं पूरे दिन चंदू के भाग्य के बारे में सोचकर बहुत परेशान था. स्कूल से वापस आते समय मैं चंदू की झोपड़ी के पास रुका जहां वो अपनी मां के साथ रहता था.

उसकी माँ एक बूढ़ी महिला थीं. क्योंकि वो निम्न जाति की महिला थीं इसलिए उनमें उच्च जाति के लोगों को देखने की वो हिम्मत थी जो उच्च जाति के लोगों में खुद नहीं थी. वो मेरे प्रति बहुत दयालु थीं, हालाँकि वो मुझसे हमेशा बहुत मज़ाकिया ढंग में बात करती थीं.

यह कला उन्होंने साठ साल की पीड़ा और अपमान झेलकर हासिल की थी. उन्होंने मेरी ओर मुड़कर कहा: "ठीक है, तुम आए हो, अपने दोस्त की तलाश में. अगर कहीं तुम्हारी माँ को पता चल गया, कि मैंने तुम पर अपनी बुरी नज़र डाली है तो वो मेरी आँखें नोच लेंगी. और तुम, क्या तुम उतने ही निर्दोष हो जितने तुम दिखते हो, या फिर तुम भी अपने लोगों की तरह ही पाखंडी हो?"

"चंदू कहाँ है माँ?" मैंने पूछा.

"मुझे नहीं पता, बेटा," अब उन्होंने एक सरल आवाज़ में कहा.

"वह शहर के रास्ते गया और उसने वहां सड़क किनारे लोगों की दाढ़ी बनाकर कुछ पैसे कमाए. मुझे नहीं पता कि वह क्या कर रहा है पर मुझे नहीं लगता है कि उसे उन ग्राहकों को नाराज करना चाहिए जिनकी सेवा उसके पिता ने की है. वो अभी एक बच्चा है और अगर वो कोई मजाक करे तो लोगों को उससे नाराज नहीं होना चाहिए. तुम उससे मिलना चाहते हो और उसके साथ बाहर खेलने जाना चाहते हो? वो जब आएगा तो मैं उसे बताऊंगी. मुझे

लगता है कि वो कुछ देर में आता ही होगा."

"ठीक है, माँ," मैंने कहा, और फिर मैं घर चला गया.

चंदू ने उस दोपहर को मेरे लिए एक विशेष कोड सीटी बजाई. उसका उपयोग हम अक्सर बड़ों के हस्तक्षेप और उनकी नोक-झोंक से बचने के लिए करते थे.

"बाजार में टहलने के लिए आओ," चंदू ने कहा. "मैं तुम से कुछ बात करना चाहता हूं." और जैसे ही मैं उससे मिला चंदू ने कहा, "क्या तुम्हे पता है कि आज मैंने आज सुबह मैंने कोर्ट में लोगों की हजामत और बाल काटने के काम से एक रूपया कमाया है? अगर मुझे दोपहर के बाद बाद लाला हुकम चंद की गाड़ी की पिछली पट्टी पर बैठकर वापस नहीं आना पड़ता, तो आज मेरी और कमाई होती. लेकिन अब मैं इन रूढ़िवादियों को सबक सिखाने जा रहा हूं. मैं अब हड़ताल पर जा रहा हूं. मैं अब उनके घर के पास भी नहीं जाऊँगा. मैं लाला हुकम चंद के जुआरी बेटे से पांच रुपये में उसकी जापानी साइकिल खरीदने जा रहा हूं, और फिर मैं उसे चलाना सीखूंगा. फिर साइकिल पर बैठकर मैं हर दिन शहर जाऊंगा. मैं ओवरकोट, काले चमड़े के जूते, और सिर पर एक सफेद पगड़ी पहनकर साइकिल पर सवार होकर एकदम भव्य दिखूंगा. मैं अपने टूल-बैग को दो पहिया गाड़ी के सामने एक खूंटी से लटकाऊँगा, क्यों?"

"हां," मैं सहमत था और बहुत रोमांचित भी इसलिए नहीं कि मुझे साइकिल पर बैठा चंदू बहुत महान लगता, लेकिन मैंने खुद को अपने लक्ष्य के करीब पहुँचता हुआ महसूस किया. मुझे लगा कि अगर चंदू ने एक साइकिल खरीदी तो वह कम-से-कम मुझे

पिछले पहिये के ऊपर वाले करिएर या फिर सामने के लम्बे डंडे पर सवार ज़रूर होने देगा और शायद कभी मुझे शहर भी ले जायेगा. यह भी संभव है कि वो मुझे कभी अपनी मशीन उधार भी दे दे.

चंदू ने जब मुझे साइकिल के बारे में बताया तो उससे मुझे उसकी व्यवसायी क्षमता का रहस्योद्‌घाटन हुआ. जिस लापरवाह तरीके से वो अपना पैसा खर्च करता था उससे मुझे उसकी व्यवसायी क्षमता पर संदेह था. और फिर उसने मुझसे बड़े गोपनीय स्वर में कहा: "तुम एक या दो दिन और प्रतीक्षा करो. मैं तुम्हें कुछ ऐसा दिखाऊंगा, जिसे देखकर तुम इतना हंसोगे जितना तुम पहले कभी नहीं हँसे होगे."

"तुम मुझे अभी बताओ," मैंने अपनी अधीरता में जोर देकर कहा. उसके साहस की भावना ने मुझे उत्साह से भर दिया.

"नहीं, तुम प्रतीक्षा करो," उसने कहा. मैं तुम्हें केवल एक संकेत दे सकता हूँ. यह एक ऐसा रहस्य है जो केवल एक नाई ही जान सकता है. अब मुझे इस मशीन यानी साइकिल को चलाना सीखने दो. जब मैं साइकिल पर चढ़ूँ तब तुम मुझे पीछे से सहारा देना, फिर मुझे लगता है कि सब कुछ ठीक हो जाएगा."

"लेकिन," मैंने कहा, "यह साइकिल चलाना सीखने का सही तरीका नहीं है. मेरे पिता ने साइकिल की सबसे पिछली धुरी से सवारी करना सीखा, और मेरे भाई ने पैडल पर संतुलन होकर साइकिल सवारी करना सीखा."

चंदू ने कहा, "तुम्हारे बाप एक भारी बन्दर हैं, और तुम्हारा भाई एक लंबे पैर वाला

मकड़ा है."

उसने आगे कहा, "पर मेरी माँ मुझे बताया था कि मैं उल्टा पैदा हुआ था."

"ठीक है," मैंने कहा और फिर मैंने उसके लिए पीछे से साइकिल पकड़ कर रखी. लेकिन जब मेरा निगाह साइकिल की शानदार चमक को निहार रही थी तो मैंने अपनी पकड़ खो दी और चंदू साइकिल समेत दूसरी तरफ गिर पड़ा.

फिर मैं साहूकार की दुकान में कई किसानों को खिलखिलाकर हँसते हुए सुना. वे सभी ज़मींदार के इर्द-गिर्द ही थे. और फिर साहूकार ने चिल्लाते हुए कहा, "तुम्हें यह सही सबक मिला, लौह-युग के लड़के! अपनी हड्डियों को तोड़ो और मरो, और ऊपर जाओ! नहीं तो तुम कभी होश में नहीं आओगे!"

चंदू का सिर शर्म से झुका गया. उसने मुझ पर एक कसम खाई, "तुम मूर्ख हो, तुम गधे हो!" हालांकि मुझे लगा कि वो मेरी गर्दन पकड़कर मरोड़ देगा और मेरी गलती के कारण अच्छी पिटाई लगाएगा. फिर उसने मेरी ओर देखा, और वो शर्मिंदा होकर मुस्कुराया, और उसने कहा: "चलो हम देखेंगे कि अंतिम हँसी किसकी होगी - मेरी या उनकी!"

"मैं इस बार मशीन को कसकर पकड़कर रखूंगा," मैंने पूरी ईमानदारी से कहा, और फिर मैंने साइकिल को वहां से उठाया, जहां वो पड़ी थी.

"हाँ, कम्बख्त अपनी हड्डियों को तोड़ो, सूअर," मकान मालिक ज़ोर से चिल्लाया.

"तुम्हें परवाह मत करो!" चंदू ने मुझसे कहा. "मैं उन्हें दिखाऊंगा." और फिर वो साइकिल पर चढ़ा और मैंने साइकिल को पकड़ने में अपनी पूरी ताकत लगा दी.

फिर उसने कहा: "जाने दो!"

फिर मैंने साइकिल छोड़ दी.

उसने पेडल को अपने दाहिने पैर से बहुत ज़ोर से दबाया, जिससे पहियों के घूमने के बाद, वह खतरनाक रूप से एक तरफ चला गया था. लेकिन तभी उसने दूसरे पेडल को धक्का दिया. मशीन संतुलित हुई, लेकिन तभी चंदू ने बड़े भयावह तरीके से सीट पर से खुद को उठाया. वह एक क्षण के लिए अनिश्चित रूप से लटका रहा. उसके हैंडल खतरनाक तरीके से लड़खड़ाते रहे. ऐसा लग रहा था जैसे वो गिर जायेगा. तभी मुझे दुकान में से लोगों की हंसी और उनके कटाक्ष सुनाई दिए. मुझे लगा कि चंदू अपनी अक्षमता के कारण साइकिल से गिर जायेगा. परन्तु एक जिज्ञासु चमत्कार से, चंदू की पेडल मारने की लय में सही हो गई और उसने हैंडल को अच्छी तरह से संतुलित किया. और फिर वो आगे-आगे साइकिल चलाता रहा और मैं उसके पीछे-पीछे दौड़ता रहा और "शाबाश! शाबाश!" कहकर उसका उत्साह बढ़ाता रहा.

आधा मील की दौड़ने के बाद उसने उसे दुबारा दोहराया.

चंदू अपने कौशल के आनंद को साझा करने के लिए बहुत उत्सुक था लेकिन अगले दिन मुझे चंदू दिखाई ही नहीं दिया. क्योंकि अगले दिन मुझे स्कूल से सीधे वेरका में अपनी

चाची के पास ले जाया गया. लेकिन तीसरे दिन उसने मुझे बुलाया और कहा कि वह मुझे वो मजाक बताएगा जिसका उसने मुझसे ज़िक्र किया था. मैंने जल्दी से उसका पीछा किया, और पूछा, "मुझे बताओ, वो क्या है?" "देखो," उसने गांव के कुम्हार की भट्टी के पीछे छिपते हुए कहा. "तुम्हें पता है उस भीड़ में भला कौन-कौन है?"

मैंने भीड़ में विभिन्न चेहरों को गौर से देखा और क्षण भर के लिए, मैं काफी चकरा गया.

"वहां केवल किसान ही बैठे हैं जो मकान मालिक के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं," मैंने कहा.

"फिर से देखो, बेवकूफ!" उसने कहा, "गौर से देखो. जमींदार वहाँ है, और उसके लम्बे-चौड़े चेहरे पर अब मैली और गन्दी सफ़ेद सी दाढ़ी ऊग आई है."

"हा! हा!" मैं बड़ी खुशी से चिल्लाया. जमींदार अपनी बड़ी मोटी मूंछों पर खिजाब लगाता था पर अब उसे चेहरे पर सफेद दाढ़ी थी. "हा! हा!" मैंने एक बीमार शेर की दहाड़ लगाई! ‘‘वो दिखावटी है!"

"चुप!" चंदू ने चेतावनी दी. "यहाँ ज़्यादा शोर मत करो! लेकिन साहूकार को देखो. वह अपने वालरस जैसी तंबाकू के भूरे रंग मूंछों में एक कोढ़ी जैसा दिख रहा है. इन्हीं मूंछों को मैं कभी तराशता था. अब तुम दौड़ते हुए जाओ और "भालू, भालू" चिल्लाओ. वो तुमसे कुछ नहीं कह सकते!"

मैं चंदू का परम शिष्य था और उससे वाद-विवाद करने की मुझ में क्षमता नहीं थी.

'"भालू! भालू! भालू!" मैं बरगद के पेड़ से दुकान के किनारे तक चिल्लाते हुए दौड़ा. जो किसान दुकान में इकट्ठा हुए थे, वे हँसते हुए बाहर निकले, क्योंकि उन्हें भी साहूकार के चेहरे पर सफ़ेद वृद्धि दिखाई दे रही थी, हालांकि उनकी कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं थी."उसे पकड़ो! उसे पकड़ो! छोटे बदमाश को पकड़ो!" साहूकार चिल्लाया.
"उस लड़के की नाई लड़के चंदू के साथ मिलीभगत है."

लेकिन, मैं तब तक आसानी से बरगद के पेड़ पर चढ़ गया था, वहां से मैं मंदिर की दीवार पर कूद गया और वहां से मैंने पुजारी को अपना नारा सुनाया.

अब नाई के लड़के की हड़ताल के बारे में अफवाह चारों ओर फैल गई, और गाँव के बुज़ुर्गों की अनचाही दाढ़ी से संम्बन्धित चुटकुले हर घर में चालू हो गए. यहां तक कि जो लोग उच्च जाति के थे, वे भी बड़े लोगों की बढ़ी हुई दाढ़ी के बारे में असभ्य टिप्पिणियां करने लगे. और यह तक सुनने में आया कि मकान मालिक की पत्नी ने किसी और के साथ भाग जाने की धमकी दी, क्योंकि, वो वैसे ही अपने पति से उम्र में बीस साल छोटी थी. जब तक पति की दाढ़ी ट्रिम होती रही तब तक उसने अपने पति को सहा लेकिन अब मामला उसकी बर्दाश्त की सीमा के बाहर हो गया था.

इस दौरान चंदू ने शहर में अच्छा धंधा किया और काफी पैसे बचाए. भले ही उसने अपने लिए नए कपड़े और नए औज़ार खरीदे पर मुझे भी उसने कई उपहार दिए.
गाँव के बुज़ुर्गों ने चंदू को उसके अपराधों के लिए जेल भेजने की धमकी दी, और उसकी माँ पर भी उनकी आज्ञा मानने का ज़ोर डाला. नहीं तो शांति का उल्लंघन करने के जुर्म में उसे

पुलिस थाने के डालने की धमकी दी.

लेकिन चंदू की मां ने अपने जीवन में पहली बार समृद्धि अनुभव की थी. उसने बिना लाग-लपेट के उन सभी को बताया कि वो उन लोगों के बारे में क्या सोचती थी. चंदू की माँ की भाषा पहले से भी ज़्यादा स्पष्ट थी.

तब गांव के उच्च जाति के लोगों ने वेरका के नाई को बुलाने की सोची और उसे दो पैसों की बजाए एक आना (चार पैसे) देने की पेशकश की. वो आमतौर पर चंदू को दो पैसे ही देते थे.

हालाँकि, इस बार चंदू ने एक नई धारणा की कल्पना की जो पहले उसने पहले कभी सोची थी. उसने शहर में नाई नृंगन दास की दुकान को देखा था. उस दुकान को देखकर उसने अपने साथियों के साथ धूनु में एक दुकान खोलने की सोची, जहाँ सात मील की दूरी के नाई आ सकते थे. फिर चंदू ने अपने चचेरे भाई और धुनू के अन्य सभी नाइयों की एक विशेष बैठक में अपना नया प्रस्ताव रखा. चंदू एक अच्छा वक्ता था और वो सबको मनवाने में सफल रहा. उसने बाकी नाइयों को समझाया कि अब उन्हें अपने मालिकों की छोटी ऊँगली पर नाचने की कोई ज़रुरत नहीं थी.

"राजकोट जिला नाई ब्रदर्स - हेयरड्रेसिंग और शेविंग सैलून" की शुरुआत के बाद कई अन्य मेहनतकश लोगों ने अपने-अपने धंधों की कई अन्य सक्रिय ट्रेड यूनियनों चालू की हैं.

अंत